नोट्स

B.A. Part-III (Hon's)

Subject :- Geography

Paper-VII (Urban Geography

Unit-IV

Q. केन्द्रीय स्थल क्या है? वाल्टर क्रिस्टाल के केन्द्र स्थल सिद्धान्त का वर्णन करें? (Town and Cities as Central Places)

केन्द्रीय स्थल या केन्द्रीय स्थान (Central Places) वह बस्ती (अधिवास) है, जो चारों ओर फैले पृष्ठ प्रदेश के लिये सामाजिक-आर्थिक प्रकार के विभिन्न कार्यों का आवश्यक रूप से एक संग्रह केन्द्र है, जिन कार्यों द्वारा यह बस्ती अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करती है, उन्हें केन्द्रीय कार्य (Central Function) कहा जाता है।

सामान्यतः केन्द्रीय स्थल का अर्थ कस्बा (Town) होता है, परन्तु किसी एक नगरीय क्षेत्र में कई केन्द्र स्थल हो सकते हैं, जो वितरण बिन्दु के रूप में कार्य करते हैं तथा प्रत्येक वितरण बिन्दु अपने-अपने समीपवर्ती क्षेत्र को सेवाएँ प्रदान करते हैं। ऐसी सेवायें ग्रामीण व नगरीय दोनों क्षेत्रों की हो सकती हैं।

मार्क जेफरसन के अनुसार :— "नगर स्वयं विकसित नहीं होते, आस-पास का ग्रामीण क्षेत्र ऐसा वातावरण उपस्थित करता है कि केन्द्रीय स्थलों पर कुछ विशेष कार्य होना आवश्यक हो जाता है।"

अतः इस परिभाषा से पता चलता है कि नगरों का विकास समीपवर्ती देहाती क्षेत्रों के संसाधनों पर अधिकांशतः निर्भर करता है। नगर में रहने वाली जनसंख्या को भोजन, दूध, साब्जियाँ, फल, अण्डा आदि दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्र से होती है तथा वाणिज्य, व्यवसाय व औद्योगिक कच्चे माल एवं मानव श्रम की भी प्राप्ति होती है। दूसरी ओर नगर आर्थिक राजधानी के रूप में समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों की सेवा करता है। और यह केन्द्रीय स्थल (Central Place) कहलाता है।

केन्द्रीय स्थल के कार्य (Work of Central Places)

प्रत्येक केन्द्रीय स्थल के उद्भव एवं विकास के लिये कुछ कार्य होते हैं, जिन्हें केन्द्र स्थल सदैव करता रहता है। किसी स्थल के उद्भव का कारण आस-पास ग्रामीण क्षेत्रों की क्रय-शक्ति की सुविधा के आधार पर हो सकता है, वहीं आकार उस प्रदेश के सभी लोग अपने सामानों की खरीद या बिक्री करते हैं। इस प्रकार ऐसे केन्द्र स्थल का प्राथमिक कार्य क्रय-विक्रय है। प्रदेश के अन्तर्गत इसी तरह अन्य प्राथमिक कार्यों के कारण कई सेवा केन्द्र, बाजार, मण्डियाँ, मेला आदि विकसित हो जाते हैं।

अतः केन्द्रीय स्थानों (Centre Place) के कार्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है — (1) मूल्य कार्य (Basic Activities) (2) गैर-मूल कार्य (Non-Basic Activities)

Scanned with CamScanner

→ केन्द्रीय स्थल में मूल कार्यों का आधार नगर के समीपवर्ती प्रदेश से प्राप्त होता है। इन कार्यों द्वारा ही नगर बाहरी क्षेत्रों से धन अर्जित करता है। केन्द्र स्थान (Centre Place) के मुख्य कार्यों में औद्योगिक क्रियायें, व्यापारिक, वित्तीय, प्रशासकीय, मनोरंजन व सुरक्षा सम्बंधी कार्य शामिल है।

2. गैर मूल कार्य (Non-Basic Activities) :— इन्हें स्थानिक क्रियाएं भी कहते हैं, जो नगर के लोगों के लिये आवश्यक होते हैं। किसी नगर पालिका द्वारा नगर में, शिक्षा, बिजली, पानी, प्रकाश, सड़क आदि की व्यवस्था करना गैर मूल कार्य है।

वाल्टर क्रिस्टालर का केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त

जर्मन अर्थशास्त्री वाल्टर क्रिस्टालर ने 1933 में नगरीय व ग्रामीण अधिवासों के वितरण का एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसमें उन्होंने बताया कि— "एक नगरीय केन्द्र (Urban Centre) को उत्पादक भूमि का एक निश्चित क्षेत्रफल घोषित करता है। किसी केन्द्र का सत्ता इस लिये बनी रहती है कि वह अपने समीपवर्ती क्षेत्र को अनिवार्य सेवाएं प्रदान करता है।"

वाल्टर क्रिस्टालर ने Centre Place को पदानुक्रम में उल्लेख किया है, जो निम्न है।—

(क) क्रिस्टालर का बाजार सिद्धान्त :— (Marketing Principle) :— क्रिस्टालर ने बाजार सिद्धान्त पर आधारित केन्द्र स्थलों के जाल को K=3 नेटवर्क कहा है। इस नियम के अनुसार अधिवासों का पदानुक्रम 1, 3, 9, 27, 81, 243 आदि का क्रम होगा। प्रत्येक केन्द्र अपने आस-पास के क्षेत्र को अधिकाधिक सेवा बाजार के रूप में प्रदान करेगा।

(ख) क्रिस्टालर का यातायात नियम या ट्रैफिक सिद्धान्त :— क्रिस्टालर ने बाजार सिद्धान्त केन्द्र स्थलों के जाल को K=4 नेटवर्क कहा है। इस नियम के अनुसार केन्द्रों और उसके प्रदेशों की संख्या में कुल वृद्धि क्रमशः 1, 4, 16, 64, 256 का क्रम होगा। यातायात केन्द्र स्थल रैखीय ढंग से विकसित होते है, न कि क्षेत्रीय या स्थानिक ढंग से।

(ग) क्रिस्टालर का प्रशासकीय सिद्धान्त :— क्रिस्टालर ने प्रशासकीय नियम में K=7 का नाम बताया है जिसमें केन्द्र स्थान 1, 7, 49, 343, 2401 के क्रमानुसार व्यवस्थित होने चाहिए।

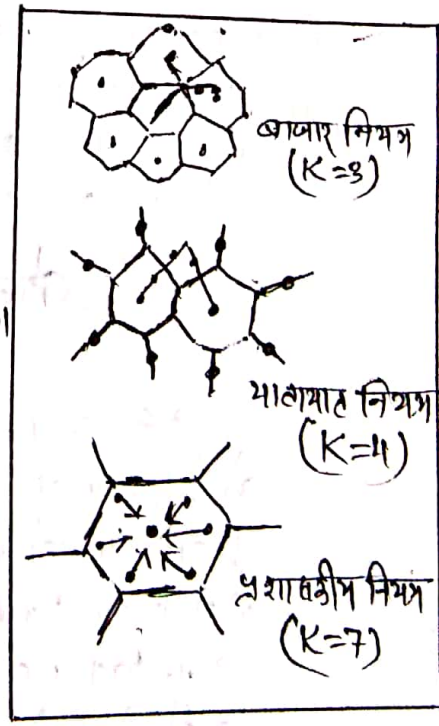

Scanned with CamScanner